The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

पं. दीनदयाल उपाध्याय: मानवाधिकार, मानवता और समाज के समग्र विकास की अवधारणा

सुरेश कुमार

शोधार्थी, समाज विज्ञान स्कूल,दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय,धर्मशाला।

डा. संजय कुमार

सहायक आचार्य, समाज विज्ञान स्कूल, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17328755

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

एकात्म मानववाद, पं. दीनदयाल उपाध्याय, अंत्योदय, सामाजिक न्याय, समग्र मानव, विकास, गरीब और पिछड़ा वर्ग, आर्थिक विकास

ABSTRACT

हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारत माता है, केवल भारत नहीं। माता शब्द हटा दिया जाए तो भारत केवल ज़मीन का एक टुकड़ा रह जाएगा। विडंबना यह है कि अवसरवादी राजनीति के कारण दलित और पिछड़े वर्गों का उत्थान नहीं हो पाया है। समतामूलक समाज की स्थापना का लक्ष्य जहां 'आरक्षण की राजनीति के भंवरजाल में फँस चुका है, वहीं सेकुलरवाद के कारण देश के कुछ भागों में अलगाववाद चरम पर है। वोट बैंक की राजनीति के कारण एक समुदाय विशेष की कट्टरवादी मध्ययुगीन मानसिकता का पोषण कर उसे मुख्यधारा में शामिल होने से वंचित किया जाता है। दलित - शोषित आदिवासियों के उद्धार के लिए आरक्षण के बाद अब तथाकथित सेकुलर दल मज़हब आधारित आरक्षण की पैरवी कर रहे हैं। ऐसी ध्रुव नीतियों से सह समाज के समेकित विकास की आशा व्यर्थ है। इस बात में दो राय नहीं कि समाज में समानता लाने के राजनीतिक-सामाजिक प्रयास करने चाहिए किन्तु विकास का यह पैमाना कदापि नहीं होना चाहिए कि सक्षम वर्ग को अवसरों में वंचित कर उन्हें कमजोर तबके की बराबरी में लाया जाए। कमजोर और वंचितों का उद्धार हमारा लक्ष्य होना चाहिए। इस दृष्टि से दीनदयाल जी का एकात्म मानववाद' हमारा मार्गदर्शक बन सकता है। सत्ता-अधिष्ठान को राजनीतिक, छुआछूत की मानसिकता त्याग समाज के समग्र विकास के लिए इस दर्शन को केंद्रीय नीतियों में आत्मसात करना चाहिए। भारत में सर्वांगीण विकास की चुनौती हमारे सम्मुख है। एक ओर हम अनेक क्षेत्रों विशेषकर विज्ञान और प्रौद्योगिकी में, विश्व के अग्रणी देशों में शामिल हैं दूसरी ओर निर्धनता, भूखमरी, कुपोषण, उपचारहीन बीमारियाँ और बाल मृत्यु दर आदि में हम अफ्रीका के

कई अविकसित देशों की बराबरी पर हैं। देश के चहुँमुखी विकास के लिए 'अन्त्योदय की अवधारणा' को राष्ट्रीय स्तर पर अपनाना श्रेष्ठकर होगा।

परिचय:

"मानव मात्र के कल्याण का मार्ग तभी प्रशस्त हो सकता है, जब उसका सर्वांगण विकास हो। व्यक्ति एकांगी नहीं, बहुरंगी है। मानव तो शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का सम्मिलित रूप है।"यह उद्धगार थे प्रखर राष्ट्रवादी, राजनैतिक, संत और देश में वैकल्पिक राजनीति की भूमि तैयार करने वाले पं. दीनदयाल उपाध्याय के। आज हमारे चारों ओर राजनैतिक और आर्थिक निराशा पसरी है। पं.दीनदयाल उपाध्याय की याद स्वाभाविक है। उनके विचारों की प्रासंगिकता आज के राजनैतिक – आर्थिक व सामाजिक परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। दीनदयाल जी स्वयं के आदर्श स्वधर्मी होने के साथ ही श्रेष्ठ राष्ट्रभक्त और विचारक थे। मथुरा के नगला चंद्रबान गांव में जन्मे दीनदयाल जी में दार्शनिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, इतिहासकार, पत्रकार और संगठनकर्ता; सभी मुखर भाव से सम्मिलित थे। उन्होंने 'एकात्म मानववाद' के रूप में जिस चिंतन को प्रतिपादित किया, वह भारत की सनातन सभ्यता का निचोड़ है। एकात्म मानववाद के सिद्धांत द्वारा दीनदयाल जी ने आधुनिक और अर्थव्यवस्था के लिए एक भारतीय धरातल प्रस्तुत किया।

सन 1964 में ग्वालियर में हुई भारतीय जनप्रतिनिधि सभा समक्ष यह सिद्धांत रखते हुए उन्होंने कहा था "भारत के सांस्कृतिक इतिहास में क्रांति लाने वाले 2 पुरुषों की याद आती है। एक, जगत गुरु शंकराचार्य, जो सनातन धर्म का संदेश लेकर देश में व्याप्त अनाचार समाप्त करने निकले थे और दूसरे, चाणक्य, जो अर्थशास्त्र धारणा के प्रतिपादक थे। इन दोनों पुरुषों ने भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया। पं. दीनदयाल जी का कहना था कि इस सिद्धांत का प्रतिपादन करना उनके लिए उतना ही महत्वपूर्ण प्रसंग है जितना इन दोनों पुरुषों के लिए था। भारतीय विदेश नीति आयातित और उधार ली गई अन्य विचारधाराओं की बजाय भारतीय जीवन दर्शन पर आधारित मानव कल्याण का संपूर्ण विचार करके 'एकात्म मानववाद' के रूप में उसे भारतीय दृष्टिकोण को नए सिरे से सूझबूझ करना है।"

अंत्योदय की अवधारणा: इस समय भारत की अर्थव्यवस्था विश्व में सबसे अधिक तेजी के साथ आगे बढ़ रही है। इतना ही नहीं भारत में अमीरों और करोड़पतियों की संख्या बढ़ती चली जा रही है। विश्व के सबसे अमीर व्यक्तियों में अमेरिका के 5 और भारत के 3 हैं। यह सब सुनकर प्रसन्नता होती है, राष्ट्रीय स्वाभिमान से मस्तक ऊंचा हो जाता है। परंतु कुछ दिन के बाद मुंबई के निकट एक गांव जौहर तालुका का एक और समाचार पढ़ने को मिला। 28 वर्षीय एक अति गरीब मां ने अपनी बेटी को 400 रुपए में रमेश नामक व्यक्ति को बेच दिया। वह मां गरीबी और भूखमरी से इतनी लाचार थी कि 400 रुपए लेकर अपने जिगर के टुकड़े को बेच कर चली गई। एक मां की लाचारी मजबूरी कितनी होगी कि 400 रुपए में वह कर दिया उसने पढ़कर ही दिल दहल जाता है। उसी गांव में 1993 में 34 बच्चे कुपोषण और भूखमरी के कारण मर गए थे। पिछले वर्ष भी इसी कारण कुछ बच्चों के मरने का समाचार आया था।

विश्व की ऐश्वर्य नगरी मुंबई के बिल्कुल निकट इस क्षेत्र की आबादी, 1 लाख 27 हजार के लगभग है जिनमें से 90% आदिवासी गरीब रहते हैं। भारत के विकास के संबंध में इसी प्रकार के आर्थिक विषमता के समाचार छपते रहते हैं। भारत के विकास की

सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों में नहीं हुआ। विकास का लाभ सबसे ऊपर के लोगों को मिला और सबसे कम लाभ सबसे नीचे के सबसे गरीब लोगों को हुआ। जितनी आर्थिक वृद्धि हो रही है, उतनी ही आर्थिक विषमता बढ़ रही है। आजादी के 72 वर्षों के बाद भी महात्मा गांधी जी का अंत्योदय का सपना पूरा नहीं हुआ। आर्थिक विकास तो हुआ परंतु सामाजिक न्याय नहीं हुआ। सब वर्गों में अमीरी चमकती रही और गरीबी सिसकती रही। अमीरी-दरिद्रता, सर्वोदया और अंत्योदय तभी भारत में 'सबका – साथ, सबका विकास' के लिए भूख पर राजनीति नहीं एक अंत्योदय योजना चाहिए। इसलिए 'अंत्योदय की अवधारणा' आज के सन्दर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

साहित्य समीक्षा:

डॉ. महेश चंद्र शर्मा द्वारा संपादित **"पं. दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय"** (15 खंड) भारतीय विचारधारा के महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक है। इसमें पं. दीनदयाल उपाध्याय के लेख, भाषण, पत्र, और अन्य दस्तावेज़ों का संकलन किया गया है, जो उनके **एकात्म मानववाद**, **अंत्योदय**, और **संस्कृतिक राष्ट्रवाद** जैसे विचारों को स्पष्ट करते हैं। डॉ. महेश चंद्र शर्मा ने इस वाङ्मय के माध्यम से पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को संरक्षित और प्रसारित किया है। यह ग्रंथ उनके विचारों की गहराई और विविधता को उजागर करता है, जो भारतीय समाज और राजनीति के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। इस वाङ्मय में पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की **सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक** दृष्टिकोण से समीक्षा की गई है, जो उनके समग्र दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है। यह ग्रंथ शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ है, जो भारतीय विचारधारा और राजनीति में रुचि रखते हैं।

डॉ. गायत्री सिंह एवं डॉ. भरत सिंह द्वारा दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानव दर्शन एवं अन्त्योदय शैक्षिक के अंतर्गत: दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन मानव जीवन को एक समग्र दृष्टिकोण से देखने की प्रतिज्ञा करता है। यह दर्शन केवल आर्थिक या भौतिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक विकास को भी शामिल करता है। उपाध्याय के अनुसार समाज की प्रगति का मूल्यांकन सबसे अंतिम व्यक्ति (last person in the society) तक पहुँचने से होता है, जिसे वे अंत्योदय के सिद्धांत के रूप में व्यक्त करते हैं। अद्यतन साहित्य में स्पष्ट है कि एकात्म मानव दर्शन और अंत्योदय शिक्षा का व्यापक प्रभाव शिक्षा नीति, सामाजिक सुधार और ग्रामीण विकास में देखा जा सकता है। समीक्षा से स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन और अंत्योदय शिक्षा मानव जीवन को समग्र दृष्टिकोण से समझने का एक वैज्ञानिक और नैतिक आधार प्रदान करता है। शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज और व्यक्ति के पूर्ण विकास का साधन बनती है।

डॉ. भुकेश चंद्र लली एवं डॉ. लेखा सेगर द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन सामाजिक - आर्थिक पहलू शैक्षिक के अंतर्गत: एकात्म मानव दर्शन सामाजिक समानता, आर्थिक समावेशन और नैतिक मूल्य पर आधारित है। शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी और आर्थिक चेतना विकसित करने का माध्यम भी है। इस दृष्टिकोण से गरीब और पिछड़े वर्गों को सशक्त बनाने, स्थानीय संसाधनों का उपयोग करने और आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए नीतिगत और शैक्षिक उपाय सुझाए जाते हैं। अध्ययन यह दिखाता है कि अंत्योदय शिक्षा मॉडल ग्रामीण विकास और रोजगार सृजन में भी प्रभावी है। एकात्म मानव दर्शन और अंत्योदय शिक्षा सामाजिक-आर्थिक न्याय और समावेशी विकास के लिए एक प्रभावी ढांचा प्रस्तुत करती है, हालांकि इसके आधुनिक डिजिटल शिक्षा और विभिन्न क्षेत्रों में प्रभाव पर अतिरिक्त शोध की आवश्यकता है।

डॉ. आलोक श्रीवास्तव एवं डॉ. पूजा श्रीवास्तव द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय के उद्धृत एकात्म मानव दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थकता शैक्षिक के अंतर्गत: पं.दीनदयाल उपाध्याय का **एकात्म मानव दर्शन** व्यक्ति और समाज के समग्र विकास पर केंद्रित है। यह दर्शन **नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों** के साथ-साथ शिक्षा के माध्यम से **समान अवसर और सामाजिक समावेशन** पर भी जोर देता है। **डॉ. आलोक श्रीवास्तव एवं डॉ. पूजा श्रीवास्तव (2022)** के अनुसार: एकात्म मानव दर्शन का **वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्व** बढ़ गया है, क्योंकि आधुनिक समाज में केवल आर्थिक विकास ही नहीं, बल्कि **समानता, नैतिकता और सामाजिक न्याय** भी आवश्यक हैं। शिक्षा इस दर्शन का मुख्य माध्यम है, जो **व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व** विकसित करती है। यह दृष्टिकोण **आधुनिक शिक्षा नीतियों और सामाजिक विकास कार्यक्रमों** के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। अध्ययन स्पष्ट करता है कि पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन आज भी **समाज और शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक** है, विशेष रूप से सामाजिक समानता और नैतिक शिक्षा के संदर्भ में।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्तित्व-दर्शन, कमल किशोर गोयंका: यह पुस्तक पं. दीनदयाल उपाध्याय के जीवन, व्यक्तित्व और विचारों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करती है। कमल किशोर गोयंका द्वारा संपादित इस काव्यात्मक और विचारोत्तेजक संग्रह में पं. उपाध्याय के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया गया है। पं. दीनदयाल उपाध्याय का व्यक्तित्व भारतीय

राजनीति और समाज के लिए एक प्रेरणा स्रोत रहा है। उनका जीवन साधना, समर्पण और राष्ट्रसेवा का प्रतीक था। इस पुस्तक में उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया गया है, जो उनके विचारों और कार्यों को समझने में सहायक हैं।

सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों पर दृष्टिकोण, शान्ता कुमार: शान्ता कुमार जी का संपादकीय लेख सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक मुद्दों को **सामाजिक न्याय और नैतिक दृष्टिकोण** से विश्लेषित करता है। लेख का उद्देश्य पाठकों को **सकारात्मक सोच और जागरूकता** की ओर प्रेरित करना है। लेख में **समाज में नैतिक मूल्यों और नागरिक जिम्मेदारी** पर जोर दिया गया है। राष्ट्रीय और स्थानीय मुद्दों को समझाने के लिए लेखक **तथ्यों और उदाहरणों** का सहारा लेते हैं। पाठकों को **सकारात्मक बदलाव और सामाजिक सहभागिता** के लिए प्रोत्साहित किया गया है। शान्ता कुमार जी का संपादकीय लेख **सहज, सुसंगत और प्रेरक** है। यह लेख वर्तमान सामाजिक और शैक्षिक परिदृश्य में **सकारात्मक दृष्टिकोण और जागरूकता** विकसित करने में सहायक है। शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के लिए यह **सामाजिक और शैक्षिक संदर्भ** में एक मूल्यवान स्रोत है।

शोध कार्य विधि:

इस शोध कार्य में **पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन और अंत्योदय शिक्षा पर आधारित अध्ययन** को व्यवस्थित रूप से दो मुख्य चरणों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक चरण में प्रयुक्त विधियाँ और डेटा संग्रह के स्रोतों का विस्तृत विवरण नीचे प्रस्तुत है।

चरण 1: पूर्व में हुए शोधों का अध्ययन

इस चरण में विषय से संबंधित **सभी उपलब्ध साहित्य और पूर्व शोधों** का विस्तृत अध्ययन किया। इसका उद्देश्य था:

- पं. दीनदयाल उपाध्याय के **एकात्म मानव दर्शन और अंत्योदय शिक्षा के विभिन्न पहलुओं** को समझना।
- पिछले शोधों में प्रयुक्त **सिद्धांत, निष्कर्ष और दृष्टिकोण** का विश्लेषण करना।
- अध्ययन के दौरान पाए गए **सिद्धांतों में अंतराल और अनुसंधान के अवसर** को चिन्हित करना।

स्रोत और सामग्री:

- शैक्षिक और शोध पत्रिकाएँ
- पुस्तकें और संकलन ग्रंथ
- संपादित लेख और समाचार पत्र के संपादकीय
- शोध प्रबंध और थीसिस

- इंटरनेट और डिजिटल पुस्तकालय

विश्लेषण और व्याख्या:

- प्राप्त साहित्य का **समीक्षा (Literature Review)** के रूप में विश्लेषण किया गया।
- विभिन्न शोधों के **सिद्धांतों, निष्कर्षों और अनुसंधान दृष्टिकोण** की तुलना की गई।
- अंततः **संग्रहीत जानकारी का सारांश** और शोध के लिए उपयुक्त निष्कर्ष तैयार किया गया।

चरण 2: डेटा संग्रह और ऐतिहासिक विधि

दूसरे चरण में **प्राथमिक और द्वितीयक डेटा** एकत्रित किया गया, जो शोध के लिए आवश्यक ठोस तथ्यों और प्रमाणों का आधार बनता है।

ऐतिहासिक विधि (Historical Method)

इस विधि के अंतर्गत पं. दीनदयाल उपाध्याय के जीवन, कार्य और शिक्षाओं पर आधारित **ऐतिहासिक दस्तावेज़ों, लेखों और अभिलेखों** का अध्ययन किया।

स्रोत:

- पुस्तकें और संकलन ग्रंथ
- समाचार पत्र और पत्रिकाएं
- सरकारी अभिलेख और सांख्यिकीय रिपोर्ट
- मंत्रालयों, सरकारी कार्यालयों और विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त आंकड़े
- डिजिटल और ऑनलाइन डेटाबेस, वेबसाइटें
- जनगणना और अन्य सांख्यिकीय आंकड़े

डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया:

- संग्रहित डेटा का **संगठन और वर्गीकरण** किया गया।
- ऐतिहासिक घटनाओं और पं. दीनदयाल उपाध्याय के कार्यों का **कालक्रमिक अध्ययन** किया गया।

- डेटा को **सांख्यिकीय और गुणात्मक दृष्टिकोण** से विश्लेषित कर शोध निष्कर्ष तैयार किए गए।

इस शोध पद्धति के माध्यम से शोधकर्ता ने **पूर्व शोधों और ऐतिहासिक डेटा** के आधार पर पं. दीनदयाल उपाध्याय के **एकात्म मानव दर्शन और अंत्योदय शिक्षा के सामाजिक और शैक्षिक पहलुओं** का समग्र विश्लेषण किया।

- पहला चरण शोध की **सैद्धांतिक नींव** तैयार करता है।
- दूसरा चरण शोध को **प्रायोगिक और तथ्यात्मक आधार** प्रदान करता है।

चर्चा और परिणाम:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का **एकात्म मानववाद** और **अंत्योदय सिद्धांत** यह स्पष्ट करता है कि समाज का विकास केवल आर्थिक या भौतिक नहीं होना चाहिए, बल्कि व्यक्ति के **शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास** का संतुलन होना आवश्यक है। उनका दर्शन आधुनिक भारत के सामाजिक और आर्थिक असंतुलन को समझने और सुधारने में मार्गदर्शक सिद्ध होता है। भारत में आर्थिक वृद्धि के बावजूद गरीब और पिछड़े वर्ग तक इसका लाभ सीमित रूप से पहुँच रहा है। हिमाचल प्रदेश में बीपीएल परिवारों के चयन का अनुभव दर्शाता है कि वोट की राजनीति, दबंगतंत्र और भ्रष्टाचार के कारण असली गरीबों का चयन सही नहीं होता। इस कारण विकास योजनाओं का प्रभाव तब तक सीमित रहेगा जब तक चयन और वितरण प्रणाली में **पारदर्शिता, जिम्मेदारी और ईमानदारी** सुनिश्चित नहीं की जाती।

देश में बच्चों का कुपोषण और उच्च नवजात मृत्यु दर गंभीर समस्या बनी हुई है। आँकड़े बताते हैं कि:

- 30.7% बच्चे 5 साल से कम उम्र के अंडरवेट हैं।
- 58% बच्चों की ग्रोथ 2 साल से पहले रुक जाती है।
- 4 में से 1 बच्चा कुपोषण का शिकार है।

यह स्पष्ट करता है कि विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच रहा। यदि योजनाओं का कार्यान्वयन ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ किया जाए, तो देश और हिमाचल प्रदेश में गरीबी और कुपोषण को कम किया जा सकता है। शिक्षा, नैतिक मूल्य, सामाजिक न्याय और समान अवसर प्रदान करना उपाध्याय के दर्शन का केंद्रीय संदेश है। शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने का साधन नहीं, बल्कि **समाज और व्यक्ति के पूर्ण विकास का माध्यम** है। इससे सामाजिक समावेशन, नैतिक चेतना और समान अवसर सुनिश्चित किए जा सकते हैं।

परिणाम:

1. **समग्र मानव विकास आवश्यक है:** गरीब और पिछड़े वर्ग तक विकास का लाभ पहुँचाना जरूरी है।

2. **असली गरीब तक योजनाओं का लाभ पहुँचाना:** चयन और वितरण प्रणाली में पारदर्शिता सुनिश्चित करने पर ही वास्तविक लाभ पहुँच सकता है।
3. **कुपोषण और भूख गंभीर समस्या:** बच्चों और महिलाओं के लिए पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा प्राथमिकता होनी चाहिए।
4. **समान अवसर और सामाजिक न्याय:** आर्थिक वृद्धि केवल अमीरों तक सीमित न होकर समाज के सभी वर्गों तक पहुँचे।
5. **शिक्षा और नैतिक मूल्यों का महत्व:** शिक्षा सामाजिक समावेशन और नैतिक चेतना विकसित करने का मुख्य साधन है।
6. **पारदर्शिता और जिम्मेदारी:** चयनकर्ता और अधिकारी पूरी जिम्मेदारी लें; भ्रष्टाचार और वोट की राजनीति के बिना ही विकास योजनाएँ सफल हो सकती हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन देश और हिमाचल प्रदेश के लिए मार्गदर्शक है। यदि योजनाओं का ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ कार्यान्वयन किया जाए, तो गरीबी, कुपोषण और असमानता कम हो सकती है,और "सबका साथ, सबका विकास" की अवधारणा वास्तविकता बन सकती है।

निष्कर्ष:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का **एकात्म मानववाद** और **अंत्योदय सिद्धांत** आज के भारतीय समाज के लिए अत्यंत **सार्थक** हैं। उनके विचार स्पष्ट करते हैं कि केवल आर्थिक विकास पर्याप्त नहीं है; समाज में व्यक्ति के **शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास** का संतुलन आवश्यक है। भारत में आर्थिक वृद्धि के बावजूद गरीब और पिछड़े वर्ग तक इसका लाभ नहीं पहुँच रहा, और बच्चों में कुपोषण जैसी गंभीर समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं। यह अनुभव हिमाचल प्रदेश के बीपीएल परिवारों के चयन में भी देखा गया है, जहाँ पिछले दशकों में अधिकांश चयन असली गरीबों को न देकर दबंग और बाहुबली वर्ग को दिया गया। यह दर्शाता है कि **भ्रष्टाचार, वोट की राजनीति और ईमानदारी का अभाव** विकास योजनाओं के कार्यान्वयन में सबसे बड़ी बाधा है। उपाध्याय का अंत्योदय दृष्टिकोण, जिसमें समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुँचाना मुख्य उद्देश्य है, आज भी अत्यंत आवश्यक है। यदि चयन प्रक्रिया और योजनाओं में ईमानदारी और पारदर्शिता सुनिश्चित की जाए, तो देश में गरीबी दूर की जा सकती है। शिक्षा, नैतिक मूल्य, सामाजिक न्याय और समान अवसर प्रदान करना उनके दर्शन का केंद्रीय संदेश है। यदि नीतियाँ और योजनाएँ **भारतीय सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ** के अनुरूप बनाई जाएँ और चयनकर्ता पूरी जिम्मेदारी से कार्य करें, तो "सबका साथ, सबका विकास" की अवधारणा वास्तविकता बन सकती है। पं.दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन आधुनिक भारत में **सामाजिक न्याय, समानता और समग्र मानव विकास** की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध होता है। ईमानदारी, पारदर्शिता और भ्रष्टाचार मुक्त कार्यान्वयन के साथ योजनाओं का लाभ सीधे असली गरीबों तक पहुँचाया जा सकता है, जिससे भारत और हिमाचल प्रदेश में गरीबी का वास्तविक समाधान संभव है।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा, डॉ. महेश चंद्र . *पं. दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय* (15 खंड)।

2. गोयंका, कमल किशोर. *पं. दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्तित्व-दर्शन।*

3. सिंह, शैलेश कुमार. *पं. उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन।*

4. त्रिवेदी, अनुपम. *अंत्योदय की अवधारणा और भारतीय समाज।*

5. *दीनदयाल*, प. (1998). *भारतीय आर्थिक विकास की एक दिशा*. लखनऊ: लोकहित प्रकाशन।

6. देशमुख, नाना जी. *नाना जी की पाती युवाओं के नाम।*

7. प. *दीनदयाल* उपध्याय. (2014). *विचार दर्शन, एकात्म मानव दर्शन*. नई दिल्ली: सुखचि प्रकाशन।

8. पुंज, बलवीर. (2011). लेख. *पंजाब केसरी।*

9. कुमार, शान्ता. (2012). लेख. *पंजाब केसरी।*

10. गोयंका, कमल किशोर *पंडित दींनदाल उपध्याय: व्यक्तित्व-दर्शन।*

11. Mudira, NALCO India. (2017). *पं. दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि में अंत्योदय।*

12. INSPIRA. (2022). *पं. दीनदयाल उपाध्याय की अंत्योदय संकल्पना।*

13. Anubooks. (2022). *पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों की मानव कल्याण पर प्रभाव।*

14. IJFMR. (2023). *आत्मनिर्भर भारत निर्माण में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का योगदान।*

15. SD College Ambala. (2021). *पंडित दीनदयाल उपाध्याय: एक समग्र अध्ययन।*